Ziyaae Duroodo Salaam (Hindi)

ज़ियाए दुरूदो सलाम

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ज़ियाए दुरूदो सलाम

येह रिसाला (**ज़ियाए दुरूदो सलाम**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ज़ियाए दुरूदो सलाम

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (16 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर ईमान ताज़ा कीजिये ।

40 ह़दीसें दूसरे तक पहुंचाने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है **:** जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिये दीनी उमूर की 40 ह़दीसें याद कर लेगा तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन आ़लिमे दीन की ह़ैसिय्यत से उठाएगा और बरोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ और गवाह होउंगा । (شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۲۷۰ حدیث۱۷۲۶) इस से मुराद **चालीस अह़ादीस** का लोगों तक पहुंचाना है अगर्चे वोह याद न हों । (اشعةُ اللّمعات ج ۱ ص ۱۸۶) चुनान्चे ह़दीसे मुबा–रका में वारिद फ़ज़ीलत के ह़ुसूल की निय्यत से फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़ पर मब्नी चालीस फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पेश किये जाते हैं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مُسلِم ص۲۱۶ حدیث۴۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। **(ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث٤٨٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। **(ترمذی ج۲ ص۲۸ حدیث٤٨٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा। **(ابنِ ماجه ج۱ ص٤٩٠ حدیث٩٠٧)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : ''दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।''

(نَسائی ص۲۲۰ حدیث۱۲۸۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से अ़र्ज़ की, कि रब तआ़ला फ़रमाता है : ''ऐ मुह़म्मद ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस सलाम भेजूं।''

(نَسائی ص۲۲۲ حدیث۱۲۹۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है और दस द-रजात बुलन्द फ़रमाता है। **(نَسائی ص۲۲۲ حدیث۱۲۹۴)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मर्तबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा।

(مُعْجَم اَوسَط ج۵ ص۲۵۲ حدیث۷۲۳۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा।

(اَلْقُرْبَةُ اِلٰى ربِّ العٰلمین، لابن بشکوال ص۹۰ حدیث۹۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।

(اَلتَّرغِیب فی فضائل الاعمال لابن شاهین ص ۱۴ حدیث۱۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व **महब्बत** की वजह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।

(مُعْجَم کبیر ج۱۸ ص۳۶۲ حدیث۹۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

﴾12﴿ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (مُعْجَم کبیر ج۳ ص۸۲ حدیث ۲۷۲۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

﴾13﴿ बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं, लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी बेहतरीन अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो ।

(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزّاق ج۲ ص۱۴۰ حدیث۳۱۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

﴾14﴿ बेशक जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلام) ने मुझे बिशारत दी : जो आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ता है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर रह़मत भेजता है और जो आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर सलाम पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सलामती भेजता है ।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۱ ص۴۰۷ حدیث۱۶۶۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

﴾15﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा । तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह

तुम्हारी फ़िक्रें दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

(ترمذی ج٤ ص٢٠٧ حدیث٢٤٦٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾16﴿ जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج١٠ ص١٦٣ حدیث١٧٠٢٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾17﴿ मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٥ ص٤٥٨ حدیث٦٣٨٣)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾18﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में **मह़ब्बत** रखने वाले जब बाहम (या'नी आपस में) मिलें और मुसा–फ़ह़ा करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٣ ص٩٥ حدیث٢٩٥١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾19﴿ जिस ने येह कहा :

''اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ''[1]

1 : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और इन्हें क़ियामत के रोज़ अपनी बारगाह में मुक़र्रब मक़ाम अ़ता फ़रमा।

उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। **(مُعْجَم کبیر ج۵ ص۲۵ حدیث۴۴۸۰)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿20﴾ जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते रहेंगे। **(مُعْجَم اَوسط ج۱ ص۴۹۷ حدیث۱۸۳۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿21﴾ ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों (या'नी घबराहटों) और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे। **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۵ص۲۷۷ حدیث۸۱۷۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿22﴾ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। **(اِبنِ عَساکِر ج۶۱ص۳۸۱)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿23﴾ जो मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। **(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزّاق ج۱ ص۳۹ حدیث۱۵۳)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿24﴾ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त दी है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का

और उस के बाप का नाम पेश करता है, कहता है : "फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है।" **(مُسندِ بَزّار ج٤ص٢٥٥حديث١٤٢٥)**

سُبْحٰنَ اللّٰه ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तावर है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश किया जाता है, यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर पर हाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा क़ुव्वते समाअ़त दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसल्मानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है। जब ख़ादिमे दरबार की क़ुव्वते समाअ़त (या'नी सुनने की ताक़त) का येह हाल है तो सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने ग़ुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर **बि इज़्निल्लाह** (या'नी **अल्लाह** की इजाज़त से) इन की इमदादें फ़रमाएंगे !

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद
मैं कुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿25﴾ जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े। **(فِردَوسُ الْاَخبار بمأثور الْخِطاب ج٢ ص٢٨٤ حديث ٦٠٨٣)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾26﴿ फ़र्ज़ ह़ज करो, बेशक इस का अज्र बीस ग़ज़वात में शिर्कत करने से ज़ियादा है और मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ना इस के बराबर है। **(اَیضاً ج۱ ص۳۳۹ حدیث۲٤۸٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾27﴿ क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन[3] शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। **(اَلبُدورُ السّافرةُ لِلسُّيُوطی ص ۱۳۱ حدیث ۳٦٦)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾28﴿ जिस ने येह कहा : **''جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّاهُوَ اَهْلُهٗ''**[1] 70 फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक उस के लिये नेकियां लिखते रहेंगे। **(مُعْجَم اَوسط ج۱ ص۸۲ حدیث۲۳۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾29﴿ मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। **(اَلکامِل لابنِ عَدِی ج۵ ص۵۰۰)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी त़रफ़ से ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए जिस के वोह अह्ल हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

《30》 जब तुम रसूलों (عَلَيْهِمُ السَّلام) पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

(جَمْعُ الْجَوامِعِ لِلسُّيُوطی ج١ ص٣٢٠ حديث٢٣٥٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

《31》 जिस ने कुरआने पाक पढ़ा, रब तआला की हम्द की और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा नीज़ अपने रब से मग़्फ़िरत तलब की तो उस ने भलाई उस की जगह से तलाश कर ली।

(شُعَبُ الْإيمان ج٢ ص٣٧٣ حديث٢٠٨٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

《32》 मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।

(فِردُوسُ الاخبار ج١ ص٤٢٢ حديث٣١٤٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

《33》 शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ पर पेश किया जाता है।

(مُعْجَم اَوسط ج١ ص٨٤ حديث٢٤١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

《34》 शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ (या'नी जुमा'रात के गुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ का सूरज डूबने तक) मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत कर लिया करो, जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। **(شُعَبُ الْإيمان ج٣ ص١١١ حديث٣٠٣٣)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾35﴿ जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج١ص١٨٤ حديث٦٨٨)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾36﴿ मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर 80 बार दुरूदे पाक पढ़े उस के 80 साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। **(ایضاً ج٢ص٤٠٨ حديث٣٨١٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾37﴿ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। **(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطى ج٧ ص١٩٩ حديث ٢٢٣٥٢)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾38﴿ जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर सो बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे। **(حِليةُ الْاَولياء ج٨ ص٤٩)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾39﴿ जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और तीस दुन्या की। **(شُعَبُ الْاِيمان ج٣ ص١١١ حديث ٣٠٣٥)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾40﴿ जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुरूद न पढ़ने के नुक़्सानात पर

8 फ़रामीने न-बवी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۲۱۵ حدیث ۱۵۷۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (مُعْجَم کبیر ج۳ ص۱۲۸ حدیث۲۸۸۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (تِرمِذی ج۵ ص۳۲۰ حدیث۳۵۵۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है।

(مُسندِ امام احمدبن حنبل ج۱ ص۴۲۹ حدیث۱۷۳۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ जो क़ौम किसी मजलिस में बैठे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े वोह क़ियामत के दिन जब उस की जज़ा देखेंगे तो उन पर ह़सरत त़ारी होगी, अगर्चे जन्नत में दाख़िल हो जाएं । **(ایضاً ج۳ص۴۸۹ حدیث۹۹۷۲)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾6﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । **(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزَّاق ج۲ ص۱۴۲ حدیث۳۱۲۶)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾7﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । **(عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ لابن السُّنّی ص۳۳۶ حدیث ۳۸۱)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾8﴿ जो लोग किसी मजलिस में बैठते हैं फिर उस में न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और न ही उस के नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं क़ियामत के दिन वोह मजलिस उन के लिये बाइसे ह़सरत होगी । (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) चाहे तो उन को अ़ज़ाब दे और चाहे तो बख़्श दे । **(تِرمذی ج۵ ص۲۴۷ حدیث۳۳۹۱)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के 5 इर्शादात

﴾1﴿ **फ़रमाने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ है : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को

इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को उतनी जल्दी नहीं बुझाता और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गरदनें (या'नी ग़ुलामों को) आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है । **(تاریخ بغداد ج۷ ص ۱۷۲)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ फ़रमाने सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا है : तुम अपनी मजालिस को नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो । **(تاریخ بغداد ج۷ ص۲۱٦)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ फ़रमाने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ है : बेशक दुआ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो ।

(ترمذی ج۲ ص۲۸ حدیث٤٨٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿4﴾ फ़रमाने सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم है : हर शख़्स की दुआ पर्दे में होती है यहां तक कि मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद पर दुरूदे पाक पढ़े ।

(مُعْجَم اَوسط ج۱ ص۲۱۱ حدیث۲۷۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

﴿5﴾ फ़रमाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا है : जो नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते 70 मर्तबा रह़मत भेजेंगे । **(مُسندِ امام احمدبن حنبل ج٢ ص٦١٤ حديث٦٧٦٦)**

का'बे के बदरुदुजा तुम पे करोड़ों दुरूद

त़यबा के शम्सुद्दुहा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 264)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक चुप सो सुख[100]

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

23 रबीउ़ल आख़िर 1434 सि.हि.
06-03-2013

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
40 ह़दीसें दूसरे तक पहुंचाने की फ़ज़ीलत	1	दुरूद न पढ़ने के नुक़्सानात पर 8 फ़रामीने न-बवी	11
40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1	सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان के 5 इर्शादात	12

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
مسلم	دار ابن حزم بیروت	الفردوس بماثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ بیروت
نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الکامل	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابن عساکر	دار الفکر بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	البدور السافرۃ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ
مسند بزار	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	الترغیب فی فضائل الاعمال	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند ابو یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	القربۃ الی رب العلمین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
عمل الیوم واللیلۃ	دار القبلۃ للثقافۃ بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
فردوس الاخبار	دار الفکر بیروت	☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मस्जिद से तिन्का उठा कर बाहर फेंक दिया

हज़रत मुहम्मद बिन मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं कि एक मरतबा हम इमाम बुख़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی की मजलिस में मौजूद थे कि एक आदमी ने अपनी दाढ़ी से तिन्का निकाला और फ़र्शे मस्जिद पर फेंक दिया, मैं ने देखा कि इमाम बुख़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی कभी उस तिन्के की त़रफ़ देखते हैं और कभी लोगों की त़रफ़, जब लोगों की तवज्जोह वहां से हट गई तो आप ने हाथ बढ़ा कर वोह तिन्का उठाया और अपनी आस्तीन में डाल लिया फिर जब मस्जिद से बाहर निकले तो उसे फेंक दिया।

(تاریخ بغداد ج ۲ ص ۱۳)

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net